Yayawari
via bhojpuri

NotNul

कर्मनासा के जीत

आदित्य राजन

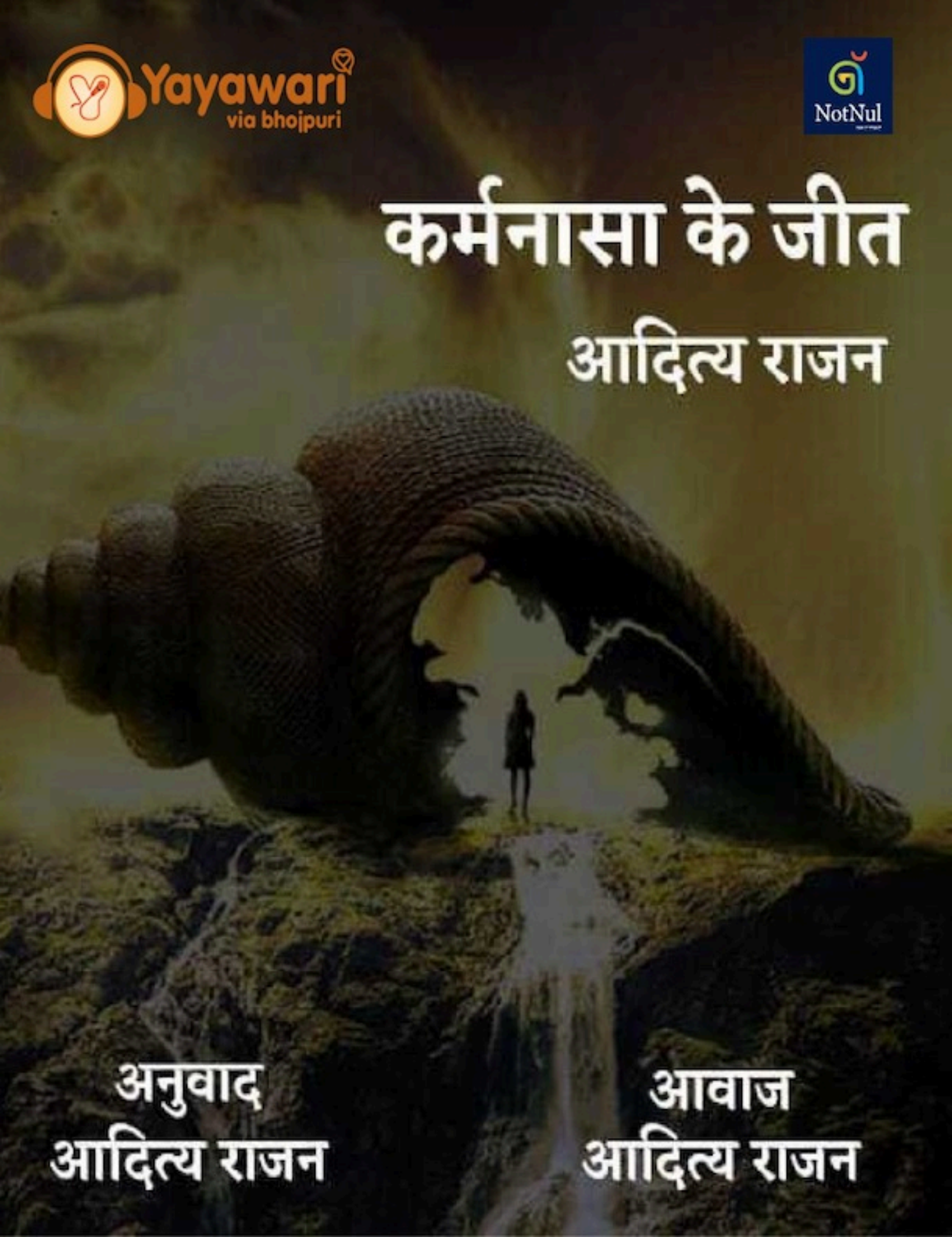

अनुवाद
आदित्य राजन

आवाज
आदित्य राजन

करमनासा के जीत

लेखक- आदित्य राजन

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: नवम्बर, 2022

जिनगी में बिना आस के अन्हरिया रात के मेयाद तनी लमहर होखेला, ओकरा बाद जब बादर फरछीन होखल सुरु होला, त अंजोर होत देरी ना लागेला बाकिर उ अंजोर कबो कबो ओह बीतल हहरत अन्हरिया रतियो से भूतहूँस लागेला..... ओहिदीन के बिहान कुछु एहि तरे भइल रहे, बुद्धन अपना मेहरारू आ छौ गो गेदा गेदी लइकन के साथे, मोटरा मोटरी कुछु कपार पर धइले, कुछु अपना पड़िया पर लदले, गांव से निकलत रहलें.....।

गांव.....ना...अब उ गांव कहां रह गइल रहे...जइसे सावन के राति में करिया बादर पुर्नवासी के चान के छन भर में ढाँप देला, ओहि तरे, गंडक के पानी बुद्धन के संहुसे गांव के कब तोप दिहलस, पते ना चलल ....बचि गइल रहे त खाली काली माई के उ बड़हन अथान जवन गांव के बहरी तनीं उचास पर रहे। रात के जब उत्तर कावर के बन्हा टूटल त गांव में हल्ला भइल...लोग ओहि राति खा, जवने पावल तवन लेके अथान की ओर भागे लागल, बुद्धन के घर से नदी सव डेग रहल... उनका दुआर पर जोड़ा बैल आ एगो पाड़ी बन्हाइल रहले सन, सोचले रहले जे उ जब बड़हन हो जाई त जवने दू पैसा के अमदनी बढ़ी, घर में खवईया हेतना हो गइल बाड़े आ कमवईया के ठेकाने नइखे।

दूर से पानी के हड़हड़, गरजल सुनात रहे...बुद्धन बो डरन पगलाइले तरे घर से दुआरा ले धावत रहली, का गठियाईं, का छोड़ीं, सब त जरुरिये बा...केतना जतन से जोगा जोगा के ई बर्तन भड़िया, कपड़ा लाता, दउरा बक्सा एकठीयवले बानीं, कुछु छोड़े